कि चुनी गई पंचायतें भंग हो रही हैं ... (**व्यवधान**) इतना अवश्य है कि आपने अपना धैर्य खो दिया है परन्तु मैंने नहीं खोया है।

मुझे देश पर आने वाले बड़े संकट दिखाई दे रहे हैं। हमें विश्व की उभरती हुई परिस्थिति पर विचार करना चाहिए। साम्राज्यवाद ने अपना आक्रमण शुरू कर दिया और हमारे देश को अस्थिर बना रहा है। स्थिरता कैसे आ सकती है? क्या आपने इस पर विचार किया है? क्या उस संबंध में माननीय राष्ट्रपति जी ने कोई संकेत दिया है? महोदय, आप यह जानते हैं कि अब विश्व व्यापार संगठन ने अपनी कार्यसूची में प्रत्येक देश की अर्थव्यवस्था में हस्तक्षेप करना भी शामिल कर लिया है। उन्हें मुक्त हस्त चाहिए। वे समान व्यवहार चाहते हैं। यही विश्व व्यापार संगठन की कार्यसूची रही है। आप जानते हैं कि वर्तमान परिस्थिति में साम्राज्यवादी अपने विवादों का भार हमारी अर्थव्यवस्था पर डालना चाहते हैं। ऐसे समय में यदि हम उसके बारे में पूर्ण रूप मे सचेत नहीं होंगे और अपने प्रजातांत्रिक संस्थानों को सुदृढ़ नहीं बनाएंगे तथा चुनाव सुधार व अन्य कार्य नहीं करेंगे तो उससे हमारे प्रजातांत्रिक एवं समाजवादी ढांचे में जंग लग जाएगा। तब हम साम्राज्यवादी दबाव को रोकने में समर्थ नहीं हो पाएंगे। कुछ ऐसे पहलू हैं जिन्हें राष्ट्रपति जी के भाषण में स्पष्ट नहीं किया गया है। आप ऊंचे-ऊंचे दावे कर सकते हैं परन्तु वे दावे केवल कुछ ही समय के लिए होते हैं। आपकी अस्थाई उपलब्धियां कोई उपलब्धियां नहीं हैं। स्थिरता का अर्थ चालबाजी से बहुमत हासिल कर लेना नहीं है। स्थिरता वह होती है जो कुछ सामान्य उद्देश्यों के साथ सम्पन्नता लाती है। महोदय, जैसाकि आप जानते ही है कि सामान्य उद्देश्य के बिना संसद में जनता की समस्याओं पर चर्चा नहीं की जा रही है। वे तथ्यों को छुपाना चाहते हैं। इस संसद को लोगों की समस्याओं पर चर्चा करनी है परन्तु वे तथ्यों को छुपाने की कोशिश कर रहे हैं। यही हो रहा है और संसद में अधिकांश समय में इस देश तथा लोगों की समस्याओं के बारे में चर्चा नहीं की जा रही है।

महोदय, विभिन्न मंत्रालयों की अनुदान मांगों तथा अन्य कार्यों की जांच के लिए स्थायी समिति प्रणाली आरम्भ करने के लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। लेकिन क्या सरकारी एजेंसियों द्वारा स्थायी समितियों की सिफारिशों को कार्यान्वित किया जाता है? यह एक अलग प्रश्न है।

महोदय, यह दसवीं लोक सभा का अंतिम दिन है और मैं समझता हूं कि काफी समय व्यतीत कर चुके हैं। आज, इस देश के वास्तविक नेतृत्व को सभी देश भक्त तथा धर्मनिरपेक्ष ताकतों को एक सामूहिक मोर्चे के रूप में संगठित करना होगा ताकि साम्राज्यवादी व सम्प्रदायवादी आक्रमण का मुकाबला किया जा सके। देश के सामने यही उद्देश्य है और यदि हम इसके लिए खड़े हो जाएं तो मैं समझता हूं कि भारत न केवल विश्व का सबसे बड़ा प्रजातंत्र राष्ट्र बन जाएगा बल्कि वह अपनी विरासत को भी कायम रख सकेगा और जो कुछ भारत के बारे में कहा गया है वह सच हो जाएगा।

मैं इन्हीं शब्दों के साथ प्रस्ताव का विरोध करता हूं क्योंकि इसमें अच्छी बातों का उल्लेख नहीं किया गया है।

प्रधानमंत्री (श्री पी.वी. नरसिंह राव): अध्यक्ष महोदय, मैं केवल श्री अहमद के प्रश्न का उत्तर देना चाहता था। उन्होंने अल्पसंख्यकों के बारे में एक-दो अच्छे सुझाव दिए हैं। वह यह जानते हैं कि स्थिति में जो भी सुधार दिखाई पड़ रहा है वह केवल हमारे ही प्रयासों का परिणाम है। हम निगम को निश्चित रूप से और अधिक धन उपलब्ध कराएंगे। हम प्रत्येक कार्य पूरा करेंगे और वह इस बात का विश्वास रखें कि जो कुछ उन्होंने कहा है, उस पर अवश्य विचार किया जाएगा।

महोदय, अब न तो अलोचना के लिए कोई अन्य मामला शेष है और न ही उत्तर के लिए उठाया गया कोई अन्य मुद्दा है। अत: मैं निवेदन करना चाहूंगा कि यह प्रस्ताव कृपया सदन के मतदान हेतु प्रस्तुत कर दिया जाए।

अध्यक्ष महोदय: अब मैं श्री पी.सी. चाको द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव को सदनप के मतदान हेतु रखता हूं।

प्रश्न यह है :

''कि राष्ट्रपति की सेवा में. निम्नलिखित शब्दों में एक समावेदन प्रस्तुत किया जाए:-

''कि इस सत्र में समवेत लोक सभा के सदस्य राष्ट्रपति के उस अभिभाषण के लिए जो उन्होंने 26 फरवरी, 1996 को एक साथथ समवेत संसद की दोनों सभाओं के समक्ष देने की कृपा की है, उनके अत्यंत आभारी हैं।''

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ

8.09 म.प.

विदाई उल्लेख

अध्यक्ष महोदय: अच्छा, यह इस सत्र का और इस सदन में दसवीं लोकसभा का अंतिम दिन जान पड़ता है। दसवीं लोक सभा की अवधि में, हमने प्रश्न किये और उनके उत्तर भी पाए हैं। हमने विधेयकों पर भी विचार किया है उन्हें पारित भी किया है। हमने बजटों पर चर्चा की, और उन्हें पारित भी किया। हमने अन्य महत्वपूर्ण मुद्दों पर भी चर्चा की है। एक पुस्तिका तैयार